मैं हिलोर हुजेमावाला

दिलीप चिंचालकर

"नमस्ते चाचाजी।"

यह कौन भतीजा आ गया? बगीचे में खरपतवार उखाड़ते हुए मैं बुदबुदाया। स्कूली लड़कों का मेरे यहाँ कोई काम न था।

मैं हिलोर हुजेमावाला...!

कितना अनोखा नाम था। याद आया दो साल पहले यह बच्चा पहली बार मेरे घर आया था। यही कोई आषाढ़ का महीना था। बारिश के एक झले के बाद मौसम साफ हो चला था। मैं शहतूत के पेड़ के नीचे बैठा चार बजे की चाय पी रहा था। इस समय तक सभी फेरीवाले आकर जा चुके होते हैं। गली के मुहाने पर स्कूल बस से उतरने वाले बच्चे शोर मचाते हुए घर पहुँच चुके होते हैं। तब मैं इत्मीनान के साथ पुदीने वाली काली चाय की चुस्कियाँ लेते हुए कोई किताब पढ़ता हूँ। उसी समय रैना खूब उत्तेजित होकर भौंकने लगी थी। बगीचे के दरवाज़े पर एक लड़का खड़ा था। वह मेरे लिए एक बन्द लिफाफा लाया था। वह तो वहीं से खिसकना चाहता था। पर मेरे कहने पर वह अन्दर आया और बेंत की कुर्सी में धँस गया। रैना, मेरी अल्सेशियन बिटिया ने जब तक उसे सूँघ नहीं लिया मैं चुपचाप उस लड़के को निहारता रहा। कभी यह मेरा पेशा था जो शौक में बदला और अब स्वभाव बन गया है – चुपचाप निहारना।

"...तो श्रीमान हुजेमावाला, हिलोर हुजेमावाला। आप भुलक्कड़ तो हैं ही गुस्सैल भी हैं। शैतान कहना भी गलत न होगा। आपके पापा ने डाँटकर भेजा है ना? घर में पैर भी नहीं रखने दिया शायद। यह बिस्किट खाओ।" उसके मुँह से अभी तक कोई बोल नहीं फूटे थे इस कदर थका हुआ था। भूखा भी था तभी तो फीके बिस्किट वह बगैर मुँह बनाए खा गया। पतलून की फटी हुई जेब और जगह-जगह से बाहर निकलती कमीज़, मुँह पर लगी नीली स्याही और कमीज़ पर पड़ा धब्बा बता रहे थे कि जनाब ने आज सहपाठियों के साथ खूब धींगा-मश्ती की है। "अभी तो मम्मी से भी डाँट खाना बाकी है।" मैंने उसे छोड़ा।

"क्यों?" हिलोर इस कदर चौंका कि लगा सूखा बिस्किट उसकी हलक में अटक जाएगा।

"क्योंकि तुम्हारे पतलून की पिछली जेब फट गई है।"

यूँ पहली मुलाकात में मैं बच्चे को डराना नहीं चाहता था। मैंने बातचीत का विषय बदला। "तुम्हारा विद्यासागर स्कूल तो फुटबॉल चैम्पियन है। खेल मदिलचस्पी हो तो उसे सलीके के साथ सीखो।" पहले से परेशान उस लड़के को

मैं उपदेश नहीं देना चाहता था फिर भी कह गया कि अगले साल उसका बोर्ड का इम्तहान है। सलीका नहीं आया तो मामला गड़बड़ हो सकता है।

एक अजनबी के हाथों अपना कच्चा चिट्ठा खुलता देख हिलोर भौंचक था। "...पर चाचाजी, आपने यह सब कैसे जाना?"

...कैसे जाना? सब कुछ तो साफ-साफ दिखाई दे रहा था। इनके पिता जनाब हुजेमावाला से मेरी दुआ-सलाम है। अच्छे डॉक्टर हैं। हमारे घर से आगे कुछ दूरी पर उनका घर है। डाकिए ने गलती से मेरी चिट्ठी उनके यहाँ डाल दी थी। वे उसे अपने साहबज़ादे के हाथ सुबह सवा सात बजे भिजवाने वाले थे। उसकी स्कूल बस यहाँ नुक्कड़ पर ही रुकती थी। बच्चा सुबह चिट्ठी देना भूल गया। दोपहर को स्कूल से लौटते समय भी भूल गया था। घर पहुँचते ही अब्बा ने पूछा होगा और नाराज़ होकर उल्टे पैर वापिस भेजा होगा। तभी तो हज़रत स्कूल की यूनीफॉर्म में जस के तस बस्ते सहित मेरे दरवाज़े पर हाज़िर हुए थे। युनिफॉर्म से समझ में आ गया था कि वे किस स्कूल में पढ़ते हैं। वहाँ लड़कों के लिए आठवीं जमात तक नेकर और नौवीं से पतलून का कायदा है। चूँकि पतलून लकदक नई थी सो समझ में आ गया कि बालक नया-नया बड़ी कक्षा में दाखिल हुआ है। चेहरे की तमतमाहट और कुर्सी में यूँ धँसना दिमागी हालत बता रहा था।

नए काले जूतों का भूरापन और ठुकी-पिटी सफेद नोक से ज़ाहिर था कि भाई साहब टीम में नहीं मैदान के बाहर फ्री-स्टाइल फुटबॉल खेलते हैं। पिछली जेबें ऐसी ही पकड़ा-पकड़ी में फटती हैं। बच्चा "संस्कारी" लग रहा था। क्योंकि आते ही उसने नमस्ते जो कहा। दोनों हाथों से पकड़कर चिट्ठी मुझे पेश की। अँग्रेज़ी पढ़ाई के बाद भी मुझे "चाचाजी" कह रहा था।

पेशे से मैं चित्रकार हूँ और लम्बे समय तक कहानियों के लिए चित्र बनाता रहा हूँ। इसलिए लोगों को अलग-अलग हालातों में देखना मेरा स्वभाव बन गया था। उनके कपड़े और तौर-तरीकों को देखने-समझने में मज़ा आने लगा था। मेरा पसन्दीदा लेखक भी ऑर्थर कॉनन डायल जो ठहरा-जासूस शर्लाक होम्स को गढ़ने वाला। मैं तो बस हिलोर नामक किरदार को एक पर्चे की तरह पढ़ रहा था।

"आपने मेरा नाम कैसे जाना?"

"वह तुम्हारे बस्ते पर लिखा है, यदि यह तुम्हारा ही बस्ता है तो।"

मुझे हैरानी हुई कि हिलोर काफी देर तक मेरे सिलसिले के सिद्धान्त को सुनता रहा था। कोई सुनने वाला मिल जाए तो किस अधेड़ को अच्छा नहीं लगता!

वह दिन था और आज का दिन। लगभग दो साल बीत गए हैं।

"नमस्ते चाचाजी। मैं हिलोर हुजेमावाला।"

दो सालों में मैं कुछ खूँसट हो गया था इसलिए पहले बौखलाया फिर खुश हुआ। हालचाल पूछने-बताने के बाद हिलोर चहका, "चाचाजी, आपके सिलसिलों के सबक में वाकई में दम है। तभी तो गली के कुत्तों के भौंकने और अस्पताल के कर्मचारियों की हड़ताल में एक सिलसिला था।" "वह कैसे?" मैंने पूछा।

"एक रात गली के आवारा कुत्ते काफी देर तक शोर मचाते रहे थे। इससे अब्बा की नींद टूट गई। वे काफी देर तक जागते

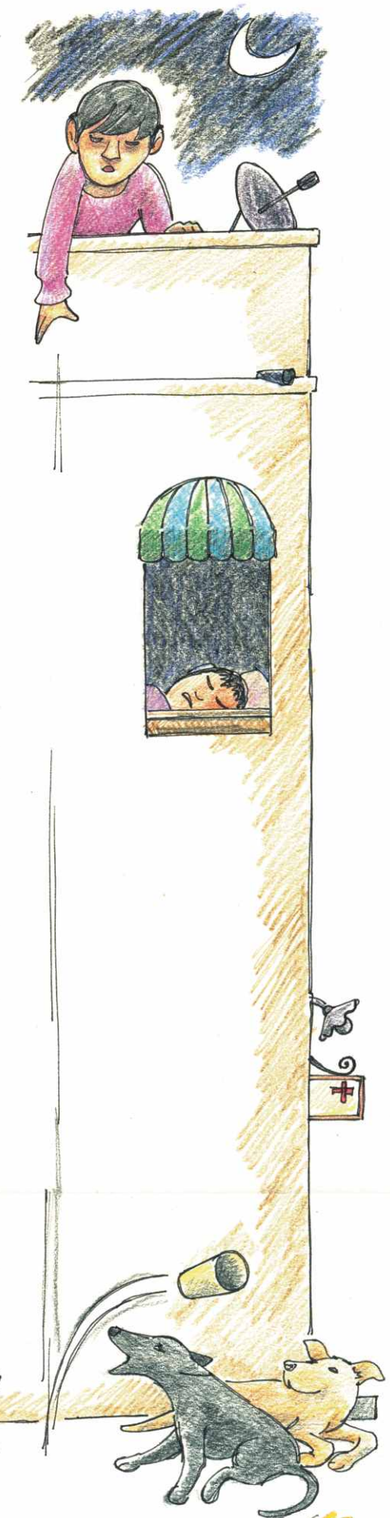

रहे इसलिए सुबह देर से जागे। उन्हें अस्पताल पहुँचने में देर हो गई। डॉक्टर नहीं गए इस कारण एक मरीज़ के घरवालों ने हँगामा खड़ा कर दिया। गुस्से में उन्होंने एक नर्स से बुरा सलूक किया तो बाकी कर्मचारियों ने काम बन्द कर दिया।"

"अरे, यह तो बुरा हुआ।" मैंने कहा।

"हाँ, मैं भी यही सोचता हूँ। ना मैं देर तक भूतों वाली फिल्म देखता, ना कुत्तों को डराने के लिए उन पर टीन का डिब्बा फेंकता। तो यह सब ना होता।"हिलोर ने गम्भीर होते हुए पूरी बात बताई।

"लेकिन बगैर इसके मैं हिलोर-प्रभाव के बारे में भी सोच नहीं पाता।" उसने उत्तेजित होते हुए कहा।

अब मेरे कान खड़े हो गए कि भई यह क्या माजरा है।

"अक्सर रास्ता चलते कुछ पालतू कुत्ते घरों से निकलकर मुझ पर लपकते रहे हैं। मम्मी और सबीना को आश्चर्य होता है कि वे इतने सारे लोगों को छोड़कर मुझे ही क्यों चुनते हैं। सिलसिले की बात से ध्यान में आया कि जब वे दरवाज़ों के पीछे बन्द होते हैं, तो मैं उन्हें आते-जाते चिढ़ाता हूँ। उन्हें यह याद रहता है और मौका मिलने पर मुझ पर गुस्सा उतारते हैं। हुआ ना कुत्तों पर हिलोर-प्रभाव?"

वाह, रमन-प्रभाव खोजने वाले वैज्ञानिक सी. वी. रमन यह बात सुनते तो खुश होते कि बच्चों को कारण और प्रभाव (कॉज़ एण्ड इफेक्ट) का सिलसिला समझ में आ रहा है।

थोड़ा रुककर हिलोर फिर बोला, "चाचाजी, आपको बधाई। आप साठ वर्ष के जो हो गए हैं।"

"धन्यवाद।" मैं खुश होकर बोला, "लेकिन तुम्हें किसने बताया?"

"आपने खुरपी चाय की ट्रे में रख दी है और चम्मच क्यारी में खोंस दिया है।"

पैसा बनाने की मशीन

सुनील बागवान

कला की कक्षा चल रही है। कक्षा में अब बस बनवारी बैठा है। वह 7-8 साल का है। उसके बाल कुछ उलझे-उलझे हैं। वह ज़मीन पर आलथी-पालथी मारे बैठा चित्र बना रहा है। मैंने बनवारी से पूछा, "क्या बना रहे हो?" वो बोला, "आदमी गड्ढा खोद रिया छै।" मैंने पूछा, "क्यों खोद रिया छै?" बनवारी ने कहा, "गड्ढा खोदबे पै आदमी नै पीसा (पैसा) मिलेगा।" मैंने पूछा, "गड्ढा खोदने वाले आदमी को पैसे कौन देगा?" बनवारी ने अपने चित्र में एक आदमी पर उँगली रखते हुए कहा, "ये साब पीसा देगा।" "साब कहाँ से आएँगे?" मैंने पूछा। बनवारी ने चित्र में बने एक बड़े मकान पर उँगली रखकर कहा, "साब यहाँ रेवे छै (रहते हैं)।" "साब के पास पैसे कहाँ से आए?" बनवारी कुछ देर चुपचाप सोचता रहा। फिर बोला, "साब कनै पीसा बणाबा की मशीन छै।" मैंने पूछा, "ये गड्ढा खोदने वाले के पास पैसा बनाने की मशीन क्यों नहीं है?" बनवारी ने कहा, "पीसा बणाबा की मशीन साब कनै ही छै, अर साब मशीन नै अपणा घर मै ताला में ही रखे छै।" मैंने पूछा, "साहब के पास पैसा बनाने की मशीन कहाँ से आई?" बनवारी ने कहा, "साब के पास पीसा बणाबा की मशीन बोत पेली सू छै। साब पीसा बणाबा की मशीन खुद कने सम्भालर राखै छै।"

बनवारी चित्र में एक और गड्ढा खोदने वाला बनाने में लग गया।

– बनवारी सहरिया जनजाति से ताल्लुक रखता है। वह सन्दर्भ शाला भभूका, ज़िला बारां, "आज की ताज़ा खबर" की कक्षा में बच्चे कोई खबर बताते हैं। बनवारी ने भी एक खबर बताई –

"कल गाँव में खेल दिखाबो वालो आयो छै। खेल दिखाबो वाले ने दो कटोरियाँ जादू से गायब कर दी छै। जादूगर ने कटोरियाँ ने दूध लेने के लिए भेज्यो। पण वे दूध लेकर नई आईं।"

कल था रविवार

कल था रविवार
छुट्टी का त्यौहार
आज है सोमवार
शिक्षक पढ़ाएँगे वार
जब पढ़ा हमने एक बार
अकल में आया दो या चार

– जीशाना, छठी, भोपाल, म. प्र.

सहरिया आदिवासी

राजस्थान के बारां ज़िले में शाहबाद एवं किशनगंज तहसील में बड़ी संख्या में सहरिया लोग सदियों से रहते आ रहे हैं। ये भील आदिवासियों से काफी मिलते-जुलते हैं। भील और सहरियाओं में खासतौर पर एक फर्क है – भील अपने पास धनुष-बाण रखते हैं जबकि सहरिया लोग कुल्हाड़ा रखते हैं।

सहरिया शब्द मूल रूप से अरबी शब्द "सेहरा" से आया है। कहते हैं मुगल शासकों ने इन्हें जंगल में रहते देखा तो इन्हें "सहर" नाम दिया। बाद में यही नाम "सहरिया" हो गया जिसका अर्थ है "बियाबान में रहने वाले"।

सहरिया लोग ज़्यादातर जंगल में पाई जाने वाली चीज़ों जैसे लकड़ी, गोंद, तेन्दुपत्ता, शहद, फल आदि को इकट्ठा कर बेचते हैं। कुछ सहरियाओं के पास ज़मीन है। ज़्यादातर भूमिहीन हैं। इनकी भाषा में क्षेत्रीय हाड़ौती भाषा का प्रभाव दिखाई देता है।